बाजार अर्थव्यवस्था एवं गाँधीवाद

आज का युग बाजारवाद का युग है, वैश्वीकरण का युग है। आज सम्पूर्ण विश्व एक बड़ा बाजार बन गया है जिसमें विभिन्न देशों के उत्पादक तथा उपभोक्ता अपनी-अपनी वस्तुओं का क्रय-विक्रय कर अपनी असीम आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। किन्तु आज से प्रायः १० वर्ष पूर्व यह महात्मा गाँधी का भारतीय राजनीतिक मंच पर पदार्पण हुआ तो स्थिति बिलकुल भिन्न थी। तत्कालीन समाज में बाजार मुख्यतः देश की सीमा से ही अनुप्राणित होता था। महात्मा गाँधी एक ऐसे संत थे जिनमें देश प्रेम कूट-कूट विश्व बंधुत्व तथा मानव कल्याण संदेश में सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय की भावना कूट-कूटकर भरी थी। इस प्रकार की भावनाओं से ओत-प्रोत महात्मा गाँधी की सोच-समझ आधुनिक अर्थशास्त्र से बिलकुल भिन्न थी।

महात्मा गाँधी के अनुसार भारत गाँवों का देश है इसकी आत्मा देश के प्रायः 6 लाख गाँवों में निवास करती है। सच पूछा जाय तो अब भी देश की प्रायः तीन-चौथाई जनसंख्या गाँवों में ही निवास करती है तथा अपने जीवन यापन के लिए कृषि पर ही अवलम्बित है। ऐसी स्थिति में महात्मा गाँधी ने आत्म-स्वावलम्बन यानी आर्थिक दृष्टि से स्वावलम्बन होने की देशवासियों को नसीहत दी। उनके अनुसार मानव की दो आधारभूत आवश्यकता है-मकान एवं वस्त्र। दोनों को वे कृषि के द्वारा ही पूरा करने की बात सोचा करते थे। मकान एवं अन्न के उत्पादन के साथ-साथ वस्त्र के लिए कच्चा माल भी कृषि से ही उत्पन्न किए जा सकते हैं। इसी परिप्रेक्ष्य में गाँधी जी के चरखा को महत्व दिया गया। प्रत्येक व्यक्ति को प्रति दिन एक घंटे सूत काटने की नसीहत थी।